सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 34
षष्ठम अंक
जनवरी 2021

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
14 आर्थिक परिदृश्य
17 राष्ट्रीय परिदृश्य
22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
30 क्रीड़ा जगत्
32 मुम्बई इंडियन्स टीम रिकॉर्ड पाँचवीं बार आईपीएल की विजेता
33 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
34 विज्ञान समाचार
36 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 विज्ञान लेख—भारत में मानसिक स्वास्थ्य: चुनौतियाँ एवं समाधान
45 प्रतिरक्षा लेख—भारत की वायु-रक्षा प्रणाली —हाइपरसोनिक और सुपरसोनिक मिसाइलें
47 बौद्धिक-सृजन संरक्षण लेख—बौद्धिक सम्पदा अधिकार: चुनौतियाँ एवं समाधान
49 कॅरियर सलाह

हल प्रश्न-पत्र

51 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल (प्रथम चरण) परीक्षा, 2018 तृतीय पाली
58 आर.आर.बी. जूनियर इंजीनियर कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2019

आर.बी.आई. असिस्टेंट (प्रा.) परीक्षा, 2020

65 तर्कशक्ति
68 संख्यात्मक अभियोग्यता
72 English Language
75 आर.पी.एफ./आर.पी.एस.एफ. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018
83 हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019(लेवल-2)
87 मध्य प्रदेश राज्य सहकारी संघ मर्यादित भर्ती परीक्षा, 2018

मॉडल हल प्रश्न-पत्र

93 आगामी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल/दिल्ली पुलिस सब-इंस्पेक्टर्स भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
109 आगामी एस.एस.सी. दिल्ली पुलिस कॉंस्टेबिल (कार्यकारी) हेतु हल प्रश्न-पत्र
117 आगामी राजस्थान पटवार भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

125 कोविड-19 (कोरोना वायरस)
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

होगी सफलता क्यों नहीं, कर्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो

जो व्यक्ति कर्तव्य से विमुख होता है वह बलवान होकर भी असमर्थ, धनवान होकर भी निर्धन तथा ज्ञानी होकर भी मूर्ख होता है.

टेनिस के डेविस कप का फाइनल मैच था. एक खिलाड़ी को विजय के लिए केवल एक अंक अर्जित करने की आवश्यकता थी और वह उस अन्तिम अंक को प्राप्त करने पर आश्वस्त था. पराजय के कगार पर स्थित दूसरा खिलाड़ी बिलकुल परेशान नहीं दिखाई दे रहा था. उसके ओठों पर मुस्कान थी तथा मुखमण्डल आत्मविश्वास से युक्त था. उसने पूरी शक्ति के साथ गेंद वापस की और गेम व सैट को अगले अंक के लिए टाल दिया. अगले अंक तक मैच टलते रहने का क्रम तब तक चलता रहा, जब तक हार के कगार पर खड़ा खिलाड़ी जीत न गया. समस्त दर्शक आश्चर्यचकित थे. आयोजकों द्वारा साक्षात्कार लिए जाने पर उसने कहा, ''मैं खेलते समय सदैव एक बात याद रखता हूँ–No match is won unless it has been lost. अर्थात् जब तक पराजित न हो जाओ, तब तक प्रतियोगिता में किसी अन्य के विजयी होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है.''

दोनों प्रतियोगियों के साक्षात्कार समाप्त होने के उपरान्त यह तथ्य उभरकर आया– अन्तिम आवश्यक अंक तत्काल न मिलने के उपरान्त जीतते हुए खिलाड़ी का आत्म-विश्वास डिग गया था और जैसे-जैसे मैच खिंचता गया, वैसे-वैसे वह टूटता चला गया था. इसके विपरीत अन्तिम अपेक्षित अंक बचाने के साथ दूसरे प्रतियोगियों का आत्म-विश्वास बढ़ गया था और ज्यों-ज्यों मैच खिंचता गया, त्यों-त्यों खेल पर उसकी पकड़ मजबूत होती गई थी.

मैच में पराजय से विजय की ओर बढ़ते हुए प्रतियोगी को देखते हुए मुझे कठपुतलियों के खेल में उस पात्र की याद आ रही थी, जो बार-बार पटकें खाने के बाद भी उठ बैठता है और अपना नगाड़ा पीटते हुए कहता है–थोड़ी-थोड़ी और बजेगी. मंतव्य स्पष्ट है–पराजय से आतंकित न हो, पराजय को स्वीकार करो, परन्तु पराजित अनुभव मत करो और अपने मन में एवं मुख पर ये शब्द मत लाओ कि हाय, मर गया! जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता है, उसके सफल होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है, जो व्यक्ति पराजित अनुभव नहीं करता है, वह अन्त में विजयश्री का वरण करेगा ही. जीवन का यह एक सर्वमान्य एवं अप्रिय सत्य है कि प्रयत्न के अभाव में विजय अथवा सफलता प्राप्त करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है. लक्ष्य जितना महान् होता है, उसको प्राप्त करने के लिए उतने ही दीर्घकालीन एवं कठोर प्रयास की अपेक्षा रहती है. सब जानते हैं कि रोम नामक महान् नगर एवं सभ्यता का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था–Rome was not built in a day. असफलता के प्रति दृष्टिभेद सफलता की ओर अथवा उससे दूर ले जाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है. जब तक प्रयास चालू रहता है, तब तक असफल होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है. महात्मा गांधी प्रायः कहा करते थे सत्याग्राही की कभी पराजय नहीं होती है, वह अपनी साधना द्वारा निरन्तर पवित्र होता रहता है. विश्व के महान् विचारक बराबर कहते आए हैं कि असफलता से निराश क्यों होते हो ? उससे प्रेरणा ग्रहण करके अपने प्रयास को त्रुटिहीन एवं सार्थक बनाओ. टी.एच. हक्सले लोक-व्यवहार के सन्दर्भ में कहते हैं कि आरम्भिक असफलताएं हमें लोक-व्यवहार सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करती हैं. जीवन के इस सत्य के प्रति आश्वस्त करते हुए फिलिंग कहते हैं कि पराजय क्या है ? कुछ नहीं,' सिर्फ शिक्षा तथा अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति की ओर एक कदम है.

●●●